VOL- IX | ISSUE- II | FEBRUARY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

"ग्रामीण क्षेत्र एवं कृषि का स्तरीकरण" (हनुमानगढ़ तहसील के संदर्भ में)

डॉ० राजेन्द्र कुमार मेघवंशी
सहायक आचार्य कला विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा
हनुमानगढ़ (राज०)

कुलदीप
शोधार्थी, भूगोल विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा हनुमानगढ़ (राज०)

प्रस्तावित शोध की प्रस्तावना

ग्रामीण एवं कृषि का स्तरीकरण में सीधा सम्बन्ध हैं, ग्रामीण क्षेत्रों का सीधा सम्बन्ध कृषि व कृषि कार्य से होता हैं, अधिकाशं जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रो में ही निवास करती हैं, ग्रामीण क्षेत्र एवं कृषि दोनो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से एक दूसरे पर निर्भर हैं, कृषि क्षेत्र एवं ग्रामीण परिवेश दोनो एक दूसरे पर कृषि उत्पादन एवं कार्य प्रक्रिया द्वारा प्रभावित करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र एवं कृषि का स्तरीकरण नगरीय पृष्ठ भूमि का एक रोचक विषय बन गया है इसके अन्तर्गत कृषि में परिर्वतन हुआ है विकास हुआ हैं, और जो नई तकनीक आई है उन सम्बन्धों को प्रस्तुत करने में पदानुक्रमों सम्बद्धता एवं विभिन्न सेवाओं को सम्मिलित किया गया है, ग्रामीण क्षेत्र एवं कृषि स्तरीकरण के सम्बन्धों के निर्धारण की यह विधि कृषि भूगोल में नवीनतम विधि है और कृषि क्षेत्र अपने निकटतम क्षेत्रों से अनेक कारणों के स्वरूप जुड़ा होता है, जिससे कृषि का स्तर उभर कर सामने आता है, कृषि क्षेत्र को जो कार्यशक्ति मिलती है, वो निकटतम ग्रामीण परिवेश के द्वारा ही उपलब्ध होते हैं, जिससे कृषि का परिवेश मूल से परिवर्तित होता हैं, किन कारणों से लोग अपने निकटवर्ती ग्रामीण केन्द्र या ग्रामीण क्षेत्र की ओर जाते है और वे कौनसी वस्तुएं एवं सेवाएं हैं, जिनका परिवहन पूर्ति कटिबंधो से मांग क्षेत्र की ओर होता हैं। तथा कौनसे भौगोलिक कारक कृषि के स्तरीकरण एवं तकनीकी विकास को प्रभावित करते हैं।

प्रस्तुत शोध राजस्थान के उत्तर में स्थित हनुमानगढ़ तहसील का लिया गया है, जो कि २८°४०' से ३०°५' उत्तरी अक्षांशों तथा ७२°३०' से ७५°३०' पूर्वी देशातंर के मध्य हैं। जिसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र सड़क के किनारे व्यवस्थित हैं, और जो सड़क से दूर स्थित हैं व कृषिगत क्षेत्र सिंचित व असिचिंत किया जाएगा।

हनुमानगढ़ तहसील में ग्रामीण क्षेत्र एवं कृषि स्तरीकरण का भौगोलिक एवं कार्यात्मक विश्लेषण के संदर्भ में अध्ययन का प्रयास है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य न केवल कृषि क्षेत्र की व्याख्या करना वरन् हनुमानगढ़ तहसील के निकटतम ग्रामीण क्षेत्रों की कृषि स्तरीकरण से सम्बन्ध की व्याख्या करना भी हैं, इस प्रशासनिक इकाई में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से समरूपता होने से सम्पूर्ण तहसील को इकाई के रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

प्रस्तावित शोध के सोपान

भूमि उपयोग मानवीय बसाव की संघनता को प्रदर्शित करता है। तहसील के लगभग सभी गांवों में नहरी सिचांई की जारी है। अतः तहसील में मानवीय बसाव और कृषि क्रियाऐं अधिक विकसित है। तहसील काल ५७.१५ प्रतिषत भाग सिंचाई के अंतर्गत आता है। तहसील में पश्चिमी यमूना नहर, भाखड़ा नहरों की शाखाओं, माईनरों द्वारा सिंचाई की जाती है। कुल सिंचित क्षेत्र का ६५ प्रतिशत भाखड़ा नहर से तथा ३५ प्रतिशत पश्चिमी यमुना नहर द्वारा सिंचित होता है। हनुमानगढ़ के उत्तरी और पश्चिमी गांव भाखड़ा नहर द्वारा सिंचित है। जबकि दक्षिणी गांव पश्चिमी यमुना नहर द्वारा सिंचित हैं। निम्न सारणी तहसील में सिंचाई को प्रदर्शित करती है।

तालिका :

हनुमानगढ़ तहसील - सिंचित क्षेत्र १९८७–८८

कुल क्षेत्र (हेक्टर)	खरीफ सिंचाई युक्त क्षेत्र (हैक्टर)	रबी सिंचाई युक्त क्षेत्र (हैक्टर)	कुल सिंचित क्षेत्र (हेक्टर)
भाखड़ा नहर			
२३४७३८	१००३५८	९८५९४	१९८९५२
पश्चिमी यमुना नहर			
१००१९५	५७६२	४७२७	१०४८९
कुल - ३३४६३३	१६१२०	१०३३२१	२०९४४१
भाखड़ा नहर १९८८–८९			
२३४७३८	९१८८०	११९७०५	२११५८५
पश्चिमी यमुना नहर			
१००१९५	५०६७	६०७४	१११४१
कुल - ३३४९३३	९६९४७	१२५७७९	२२२७२६

स्रोत : सिंचाई विभाग, हनुमानगढ़।

तहसील के दक्षिणी पष्चिमी भाग असिंचित है। यद्यपि वर्तमान में इन क्षेत्रों में सिंचाई के लिए नहरों का क्रम विकसित किया गया है। तहसील में कुल असिंचित भूमि ३४.१५ प्रतिषत है। वृक्षों के अंतर्गत क्षेत्रफल नगण्य है। १९८४ के तहसील के भूमि उपयोग में वनों के अंतर्गत ५३१.४७ हेक्टेयर भूमि थी। जो कुछ तहसील के क्षेत्र का ०.१२ प्रतिषत है। वर्तमान मे नहरों और सड़कों के किनारे वृक्षारोपण किया गया है। लेकिन कुल भूमि उपयोग में इनका महत्व बहुत कम है। तहसील के कुल क्षेत्रफल का ०.८५ प्रतिषत (२२५८.४२ हेक्टेयर) कृषि योग्य बंजर भूमि है। जबकि ७.६३ प्रतिषत भूमि कृषि के अनुपलब्ध है। इस भाग में मानवीय बसाव पाया जाता है।

प्रस्तावित शोध का महत्व

फसलों के प्रतिरूप से तात्पर्य एक निश्चित समयावधि के लिए बोई जाने वाली विभिन्न फसलों के बारे में वैकल्पिक निर्णय लेकर प्रत्येक फसल के बोये जाने वाले भू-क्षेत्र का निर्धारण करना है, अर्थात् कृषकों द्वारा खरीफ एवं रबी की अलग-अलग फसलों के लिए बोए जाने वाले भू-क्षेत्र का निर्धारण करना एवं खरीफ की फसलों भी अलग-अलग तथा रबी की फसल में भी अलग-अलग भू-क्षेत्र का निर्धारण कर उसके अनुसार बुवाई कर अधिक से अधिक फसल लेना तथा मृदा की उर्वरता में सुधार या फिर उर्वरता स्तर बनाए रखना फसल प्रतिरूप या फसल चक्र कहलाता है। उदाहरण के लिए रबी की फसल में एक खेत में चना बोया गया था। अब उसमें खरीफ में ग्वार या बाजरा अच्छा होगा, अतः वही बोया जावे। किस भू-क्षेत्र में मूंग, मोठ, ग्वार, बाजरा, कपास बोया जावेगा तथा उसके बाद किस खेत में जौ, गेहूँ, चना, सरसों बोई जावेगी, इसका निर्धारण कर भू-क्षेत्र सुनिश्चित करना है।

जिले में समय के साथ-साथ फसल चक्र प्रतिरूप में भी परिवर्तन आया है, जहां स्वतन्त्रता के काल तक १९७४ के बाद हरित क्रान्ति के प्रभाव के परिणामस्वरूप जिले में मुद्रादायिनी फसलों के क्षेत्र में भी वृद्धि देखी गई हैं, इसमें मुख्यतः सरसों, कपास, धान, गन्ना फसलों के क्षेत्रफल में जिले में काफी वृद्धि हुई है। इसके अलावा व्यापारिक तथा मुद्रादायिनी फसलों का प्रचलन भी बढ़ गया है। जिले में अपेक्षाकृत कम पानी से उत्पन्न होने वाली फसलें चना, सरसों, तारामीरा, ग्वार, बाजरा, मोठ व जौ अधिक मात्रा में बोई जाने लगी है। जिले में राज्य की तुलना में अनाज फसलों के क्षेत्रफल में कमी की अपेक्षा वृद्धि दर्ज की गई है। तिलहन क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसके अलावा, कपास, धान, गन्ना, गेहूँ, चारा, मूंगफली के क्षेत्र में भी वृद्धि देखने को मिलती है।

जिले में २००४-०५ में जहां कपास को क्षेत्रफल ११६७२७ हैक्टेयर था, वहीं वह बढ़कर २००९-१० में १३९००६ हैक्टेयर हो गया, इस प्रकार मूंग का क्षेत्र जो कि २००४-०५ में १६२३ हैक्टेयर था, वही बढ़कर २००६-१० में १६१०० हो गया। चारा के क्षेत्रफल में २००४-०५ में १२९५५ से बढ़कर २००९-१० में २५१२५ हैक्टेयर हो गया। इस प्रकार चारा में ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

खरीफ का क्षेत्रफल २४८२३५ हैक्टेयर जो कि २००४-०५ में था, वो बढ़कर २००८-०९ में ३७८७६८ हैक्टेयर हो गया। इस प्रकार रबी की फसल का क्षेत्रफल

२००४-०५ में जो ६१५७८७ हैक्टेयर से बढ़कर २००८-०९ में ६६११२५ हैक्टेयर हो गया।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य

भूगोल के अध्ययन में मानव का केन्द्रीय स्थान होता है। मानव ही प्राकृतिक वातावरण का उपयोग अपने कार्यों के लिए करता है और सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करता है। जल, मिट्टी, खनिज पदार्थ, वनस्पति, जन्तु आदि का उपयोग मनुष्य द्वारा किया जाता है। मनुष्य ही उत्पादन कार्य कृषि, पशुपालन, उद्योग, व्यापार और परिवहन आदि का कार्य करता है तथा सामाजिक संगठन, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृश्यों का विकास करता है। अतः समस्त सामाजिक विज्ञानों में जिसमें भूगोल भी सम्मिलित है, जनसंख्या अध्ययन का एक आवश्यक अंग होता है। सभी सामाजिक विज्ञान मानव द्वारा निर्मित सांस्कृतिक वातावरण का अध्ययन करते हैं। नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र की व्याख्या इसी दृष्टि से की जानी चाहिये।

प्रशासनिक दृष्टि से हनुमानगढ़ राजस्थान राज्य का एक प्रमुख नगर हैं। नगर का जिला व तहसील मुख्यालय होना तथा नगर की प्रमुख राजमार्गों पर स्थिति से इसका राजनैतिक महत्व भी हैं। राजस्थान राज्य की प्रमुख कृषि पेटी में स्थित इस नगर का देहात क्षेत्र से आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक सम्बन्ध अधिक विकसित व स्पष्ट है। सम्बन्धों की घनिष्ठता में रेल और सड़क यातायात ने अधिक वृद्धि की हैं।

हनुमानगढ़ जिला एक कृषि प्रधान जिला है। सदियों से ही कृषि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि कार्य कम ज्यादा सदियों से ही होता चला बाया है विशेषकर घग्घर (नाली) बेसिन में। कृषि से सामाजिक सम्बन्ध मजबूत हुए है। सामाजिक परिवर्तन से अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। लोगों की आमदनी बढ़ी है। आमदनी (आय) में ह्रास होने से सामाजिक व्यवस्था भंग हो जाती है एवं सामाजिक मूल्यों का पतन होने लगता है। संस्कृत की सूक्ति ''बुभुक्षितः किम् प करोति पापम्'' ऐसी परिस्थिति का द्योतक है। क्षुधा पूर्ति हेतु मानव विविध प्रकार के असामाजिक कार्य करने लगता है। परिणामस्वरूप समाज में चोरी, हत्या, कलह, बलात्कार आदि बुराईयाँ विकसित होती है। इस प्रकार के उदाहरण अध्ययनरत जिले में नित्य रोज समाचार पत्रों में टी.वी. पर देखने को मिलते है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

अध्ययनरत जिले में सामाजिक सम्बन्ध से परिवार नियोजन का गहरा सम्बन्ध है। परिवार नियोजन हिन्दू-मुस्लिम दोनों समुदायों द्वारा खुलकर मान्यता न दिये जाने के कारण सरकार के हर प्रयास सफल नहीं हो सके। हनुमानगढ़ जिले में ९१.३७ प्रतिशत परिवार नियोजन के पक्ष में है जबकि ८.६३ प्रतिशत परिवार, परिवार नियोजन को उचित नहीं मानते हैं और बच्चों को भगवान का गिफ्ट मानते है। बाल मजदूरी जिले में कोई ग्रामीण नहीं कराना चाहता किन्तु परिस्थितिवश या बच्चे के न पढ़ने के कारण ९.५० प्रतिशत ग्रामीण बच्चों को मजदूरी करने के लिए भेज देते हैं जबकि शेष इसके विपक्ष में हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. राय, श्री राम १९७८ :शाहाबाद (बिहार) में भूमि उपयोग, उत्तर -भारत भूगोल पत्रिका अंक १४, संख्या २, पृष्ठ १२८-१३४
२ शर्मा, सुरेश चन्द्र १९७० :जिला इटावा में भूमि उपयोग, उत्तर- भारत भूगोल पत्रिका, अंक ६
३. सिंह, बी.वी. एवं १९७४ : शस्य सम्मिश्रण विधि अध्ययन में एक सिंह एस.जी.पुनर्विलोकन उत्तर-भारत भूगोल पत्रिका अंक १०, संख्या १-२, पृष्ठ १-४
४. सिंह जगदीश एवं १९८१ : कृषिगत गहनता एवं विविधता तथा सिंह बी.आर. ग्रामीण विकास : गोरखपुर तहसील का प्रतिकात्मक अध्ययन, अंक १७, संख्या १,पृष्ठ १-११
५. सिंह रामबली एवं १९७० :फरेन्दा तहसील में जनसंख्या घनत्व एवं पाण्डेय, श्रीकान्त भू वैन्यासिककालिक विश्लेषण, उत्तर- भारत का भूगोल पत्रिका, अंक १५, संख्या २, पृष्ठ १२१